॥ श्री रुक्मिणी मंत्र संग्रह ॥

॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री रुक्मिणी मंत्र संग्रह ॥

॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः ॥

जप संख्या: 108 बार प्रतिदिन।

२. श्री रुक्मिणी बीज मंत्र

॥ ॐ श्रीं रुक्मिण्यै नमः ॥

यह मंत्र सौभाग्य, समृद्धि, दाम्पत्य सुख तथा भगवान श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त करने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

३. श्री रुक्मिणी-कृष्ण मंत्र

॥ ॐ श्री रुक्मिणीवल्लभाय श्रीकृष्णाय नमः ॥

यह मंत्र भगवान श्रीकृष्ण एवं माता रुक्मिणी दोनों की संयुक्त उपासना के लिए श्रेष्ठ है।

४. सौभाग्य एवं दाम्पत्य सुख मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं रुक्मिण्यै स्वाहा ॥

इस मंत्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से दाम्पत्य जीवन में प्रेम, मधुरता एवं सौहार्द की भावना बढ़ती है।

५. महालक्ष्मी स्वरूपा रुक्मिणी मंत्र

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै रुक्मिण्यै नमः ॥

यह मंत्र धन, ऐश्वर्य, सौभाग्य तथा पारिवारिक सुख-समृद्धि की कामना से जपा जाता है।

जप विधि

प्रातः स्नान कर स्वच्छ पीले या सफेद वस्त्र धारण करें।

भगवान श्रीकृष्ण एवं माता रुक्मिणी की प्रतिमा या चित्र के समक्ष घी का दीपक एवं धूप जलाएँ।

पीले पुष्प, तुलसी दल (भगवान श्रीकृष्ण को) तथा प्रसाद अर्पित करें।
कमल गट्टे, स्फटिक या तुलसी की माला से मंत्र का 108 बार जप करें।
जप के अंत में माता रुक्मिणी और भगवान श्रीकृष्ण से अपनी मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना करें।